गुरुवाणी

गुरु पूर्ण माँ से यहीं आकांक्षा करता हूँ कि मुझमें ऐसी शक्ति दें, ऐसी प्रेरणा दें कि मैं कल्याण कर सकूँ।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक १३, वाराणसी। बुधवार १५ जुलाई २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

प्रेरणा

प्रेरणा का शाब्दिक अर्थ होता है प्रभावित करना, सद्कार्य हेतु उत्प्रेरित करना। किसी व्यक्ति का, परिवार अथवा समाज के किसी विशिष्ट व्यक्ति के आचरण एवं स्वभाव से प्राकृतिक रूप में प्रेरित होकर परिवार के सदस्यों या अन्य व्यक्तियों में कार्य करने की इच्छा जाग्रत होना प्रेरणा है। यदि उनसे प्रेरित व्यक्तियों का आत्मिक विकास होता है तो शनैः शनैः तद्नुकूल आचरण के फलस्वरूप उनके कार्य के परिणाम में उत्कृष्टता के लक्षण दिखायी देने लगते हैं तथा व्यक्ति अपने सामान्य स्तर से उठकर विशिष्ट की श्रेणी में आ जाता है। अनुप्रेरित व्यक्ति इस कदर अपने निर्दिष्ट जुनून में खो जाता है कि उसे अपने को पूर्णतः कार्य सिद्धि में संलिप्त कर अपनी जड़ता को चैतन्यता में परिवर्द्धित व परिवर्तित कर लेता है। इसीलिये हमारे समाज में प्राथमिक स्तर पर ही पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों को प्रेरणा हेतु देवताओं, ऋषियों, महर्षियों तथा महापुरुषों, क्रान्तिकारियों, वीरों द्वारा किये गये संघर्ष, उनके कार्य उनकी जीवनी पढ़ायी जाती है। जिससे अधिक से अधिक विद्यार्थीगण उस वैशिष्ट्य को अपने जीवन में आत्मसात कर सकें, उन्हें जीवन के कंटकाकीर्ण मार्ग में लाख बाधाओं के बावजूद अपने सिद्धान्त, वसूलों, आदर्शों के प्रति पूर्ण निष्ठा बनी रहती है और अन्ततः वे ही सफल एवं समाज में विजयी कहलाने के योग्य बनते है। वैदिक काल से लेकर आज तक जितने भी मानवता के कल्याण हेतु कार्य हुए हैं, उनके कर्ता, धर्ता किसी से अवश्य प्रेरित होकर ही महानतम कार्यों को करने में सफल हुए हैं। सतयुग से त्रेता, द्वापर से लेकर आज तक हमारे सद्ग्रन्थ ऐसे प्रेरणादायी चरित्रों से भरे पड़े है जिसमें सत्यनिष्ठ राजा हरिश्चन्द्र, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, महाबली हनुमान, कृष्ण से लेकर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तक के जीवन गाथाओं से आज भी हम सभी प्रेरणा लेकर अपनी क्षमता के अनुसार अपने को ऊँचा उठा सकने में समर्थ होते है। यानी प्रेरणा वह शक्ति है जिससे हम उत्साहपूर्वक कल तक के दुरूह एवं दुसाध्य समझने वाले कार्य को चुटकी में हल करते रहते हैं। जिसमें अनुप्रेरित व्यक्ति के व्यक्तित्व में एक स्थायी आमूलचूल बदलाव आ जाता है।

प्रेरणा किसी घटना, दृश्य अथवा प्रसंग से भी फलीभूत होती है जैसे महात्मा बुद्ध को बीमार, अशक्त, वृद्ध एवं अरथी पर जाते हुए व्यक्ति की स्थिति ने आन्दोलित कर दिया, महात्मा गाँधी के प्रेरणास्त्रोत राजा हरिश्चन्द्र नाटक एवं कालान्तर में बालगंगाधर तिलक का स्वराज आन्दोलन रहा। यहाँ तक कि द्वापर में महान धर्नुधर एकलव्य के प्रेरणास्त्रोत गुरु द्रोणाचार्य रहे, जिनकी दैहिक उपस्थिति के अभाव में भी एकलव्य ने धर्नुविद्या में महारत हासिल की। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द के प्रेरणास्त्रोत उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस, शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास तथा महान शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रेरणानायक के रूप में चाणक्य का नाम आता है। जिनकी सुपात्रता, क्षमता ने ही उनके चुम्बकत्व गुण के कारण उन्हें ऐतिहासिक महापुरुषों की श्रेणी में खड़ा किया है जिनसे युगों युगों तक हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेरित होती रहेंगी फलतः मानवता धन्य धन्य बनी रहेगी।

जब तक प्रेरणा की शक्ति हृदय में घर कर नहीं लेती, तब तक महान शक्ति की प्राप्ति महान कार्य घटित नहीं किया जा सकता। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता, कार्य पद्धति, अलग-अलग होती है तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने मनपसंद कर्म करने को स्वतंत्र भी है। यद्यपि बिना कर्म किये सफलता की कामना तो शेख चिल्ली का ही ख्वाब कहा जा सकता है। प्रेरणा का मतलब अंधानुकरण अथवा आधे अधूरे हृदय से कार्य करना नहीं है न तो दूसरों के मार्ग पर आँख बंदकर चलना ही है, बल्कि अपने तौर तरीके से, ईमानदारी से अपनी मौलिकता के अनुसार ही कार्यरत रहकर हम ऊँचाई को छू सकते हैं, जबकि साधारणतया व्यक्ति अधिकांश दुर्गुणों से आच्छादित होकर दूसरों की स्थिति की तुलना में सुखी या दुःखी होते रहते हैं ऐसे में अपना व्यक्तित्व पिछड़ जाता है एवं जो स्वयं पर ध्यान देता है, अपने कमजोरियों के प्रति सजग रहता है, उसे दूसरों के दोष नहीं बल्कि उन्हें गुणों को ग्रहण करने की क्षमता हासिल हो जाती है। ऐसे व्यक्तित्व के धनी अपने वाणी को संयमित करने में सक्षम होते हैं तथा दुष्प्रेरणा से अपने को सर्वथा वंचित रखते हैं तथा सतत चक्षु, श्रवण एवं वाणी के दोषों से अपने को बचाये रखते हैं, मन, कर्म एवं वचन से अपने उद्धार हेतु अपने विकास हेतु सतत प्रयत्नशील होते है जिससे उनकी रक्षा स्वमेव हो जाती है। यद्यपि प्रत्येक मानव के मन-मस्तिष्क में दैवी शक्तियों के साथ ही आसुरी शक्तियों का भी वास बना रहता है, जैसे अंधेरा एवं प्रकाश की स्थिति परस्पर बनी रहती है जिसमें धैर्य से हम प्रकाश की प्रतीक्षा करते रहते हैं। तद्नुसार लाभान्वित हो जाते हैं। प्रेरणादायी व्यक्तित्व का विद्वान होना धनवान होना अथवा येन-केन-प्रकारेण समाज में प्रतिष्ठित हो जाना आवश्यक नहीं है बल्कि प्रेरणा तो आज तक कबीर दास जी के साखी के दोहों से सम्पूर्ण मानवता प्राप्त कर रही है। मीराबाई की आत्मिक भक्ति, तुलसीदास जी की कालजयी कृति रामचरितमानस की चौपाईयाँ प्रेरणा-पुंज के रूप में विख्यात हैं। सद्भक्ति से प्रेरित व्यक्तित्व में मानव प्रेम की प्रगाढ़ता बढ़ती जाती है, उसका प्रत्येक जीवित प्राणियों के प्रति दयाभाव अथवा प्रेम का भाव जाग्रत रहता है वह द्वन्द्वात्मक जीवन से परहेज करता है वह मानव में ही ईश्वर के रूप का दर्शन करता है उसका प्रत्येक जीवित प्राणियों के प्रति दयाभाव अथवा प्रेम का भाव जाग्रत रहता है। वह द्वन्द्वात्मक जीवन से परहेज करता है। वह मानव में ही ईश्वर के रूप का दर्शन करता है। उसके प्रत्येक कार्य कलाप में अभिनव प्रकार की विशिष्टता व्याप्त रहती है वे छोटी-छोटी अनुकरणीय बातों के साथ अपने बड़ों के सीख को हृदयांगम करके तथा उनका सदुपयोग कर उसे अपनी कार्यशैली में उतार कर निरन्तर स्वयं को शक्ति और शान्ति से अप्लावित किये रहते हैं। एक महान व्यक्ति ने अपनी जीवनी में लिखा है कि बचपन में ही उनके पिता ने एक प्रेरणादायी कथन कहा था जो आज भी समस्त जन के लिये बड़ा ही कारगर है उनके पिता ने उन्हें बताया था कि बेटा यह याद रखना कि ''दिन में कोई ऐसा कार्य न हो जिससे रात्रि के नींद में खलल हो तथा रात्रि में कोई ऐसा कार्य न हो जाय जिससे दिन में समाज से मुँह छिपाना पड़े।'' उक्त प्रेरणादायी वाक्य वास्तव में एक सरल, सफल, निस्पृह जीवन जीने के लिये संजीवनी के समान है। जो छल, कपट, धूर्तता, धोखाधड़ी, चोरी, लोभ, लालच आदि बुराईयों से हमारी रक्षा करता रहता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक बार

शेष पृष्ठ दो पर

मन के जीते जीत

संसार में समस्त सिद्धियों का मूल मंत्र मन की साधना है, मन का संयम है। मन का निग्रह सभी के लिये आवश्यक है। आत्म उत्थान चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति से इसका निजी सम्बन्ध है। भीतरी जीवन के अनुशीलन के लिये तथा जीवन के व्यवसायिक क्षेत्र में इस समस्या से जूझना ही पड़ता है। मन के नियंत्रण के बिना कभी व्यक्ति या समाज की उन्नति नहीं हो सकती। कहा जाता है कि **''चंचल मन भटकत दिन राती''** यानी चंचल मन की सफलता में सदा संदेह रहता है। अस्तु, सफल मानव जीवन के लिये निर्मल मन का होना बड़ा महत्वपूर्ण है। निर्मलता के साथ कार्य की पवित्रता भी बरकरार रहती है गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा हैं कि प्रभु यानी अभीष्ट की प्राप्ति हेतु **''निर्मल मन जन जो मोही पावा; मोही कपट छल छिद्र न भावा''** मन की पवित्रता पर पुन: प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि—**मन मलिन तन सुन्दर कैसे। विषरस भरा कनक घट जैसे।।** यानी मन की शक्ति बड़ी विलक्षण है यदि मन दूषित हुआ तो मनुष्य को गर्त में जाते तनिक देर नहीं लगती। मनुष्य का सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद सभी मन के अधीन है, संसार में मन से किसी की उपमा नहीं दी जा सकती। मन के वेगवान होने के कारण यह बड़े ही मुश्किल से वश में आता है, परन्तु जिसने मन को विशुद्ध, संकल्पवान बना लिया उसने तो अपने जीवन को धन्य कर लिया, क्योंकि मन अपनी आत्मा का एक आवश्यक अंग है। वह हमारे स्थूल शरीर के भीतर सूक्ष्म शरीर है। वह अदृश्य होते हुए भी बड़ा ही प्रभावकारी है क्योंकि संस्कार विहीन मन मानव-जीवन को नर्कगामी बना डालता है यानी जीवन के क्रिया-कलाप के दिशा को निर्धारित नियंत्रित करने वाली शक्ति का नाम मन है। मन को उपयोगी प्रेरणा वे अनुसार लगाना ही शुभदायक होता है, अन्यथा यह अत्यन्त अनिष्टकारक भी हो सकता है। अतएव चित्त निरोध यानी मनोनिग्रह हमारे दैनिक जीवन के लिए अपरिहार्य आवश्यकता है जो बिना यम और नियम के अभ्यास के असंभव है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय (अचौर्य), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (संग्रह का अभाव)- ये यम कहलाते हैं। शौच (अन्दर एवं बाहर की सूचिता), सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये नियम कहलाते हैं। महर्षि पतञ्जलि ने भी मनुष्य को मन के स्वामी बनने पर जोर दिया है तथा योग के आश्रय लेने को ही श्रेयस्कर कहा है।

मानव मन यदि दूसरों के सुख में सुखी तथा दु:ख में दु:खी होने की वृत्ति धारण करता है तो अनुकूल मानसिक वातावरण का निर्माण हुआ समझिये। उसमें ईर्ष्या, द्वेष, दम्भ आदि असद् वृत्तियाँ टिक ही नहीं सकती। मानव मन को तीन प्रकार की आनन्द की अनुभूति होती है, विषयानन्द, भजनानन्द, ब्रह्मानन्द। कामिनी, कांचन एवं विषय में रस लेना विषयानन्द है, ईश्वर भजन में आनन्द लेने को भजनानन्द तथा ईश्वर के दर्शन में जो आनन्द मिलता है उसे ब्रह्मानन्द की संज्ञा दी जाती है। साधारणतया हम विषयानन्द के क्षणिक सुख का अनुभव मन में करते हैं, वहीं भजनानन्दी तथा ब्रह्मानन्द का सुख महामानव, ऋषि, महर्षि दीर्घ काल तक अक्षुण्ण रूप में अनुभव करते रहते हैं।

अत: मन को साधकर साधक चाहे वह गृहस्थ हो या सन्त हो, सन्यासी हो वह अप्रतिम ज्ञान का स्वामी बन जाता है परन्तु मन का निग्रह संसार में सबसे कठिन काम है। यह एक वीरोचित गुण है, महात्मा बुद्ध के अनुसार ''मनुष्य हजारों मनुष्यों को युद्ध में हजारों बार जीत ले, पर उससे बढ़कर युद्ध विजेता वह है, जिसने एक अपने पर विजय प्राप्त कर ली है यानी मन को अपने विवेक के अधीन कर लिया है। इसे और सरल तरीके से साधने के लिए अघोर भक्तों के बीच एक पद बड़ा ही प्रचलित है जो सहज ही मानव को खाई में गिरने से बचाता है। **''मन भागत है तो भागन दे, तू मत भाग शरीर, जो कमान ढीला रहे, कैसे छूटे तीर''?**

यानी मन को साधकर अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व में हम चमत्कारिक परिवर्तन ला सकते हैं, तभी कहा गया है- **''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।''**

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ 0542-2277155.
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रेरणा

ब्रह्ममुर्हत में गंगा के सुरम्य तट पर कठोर शीतकाल की बेला में प्राणायाम एवं समाधि भाव में निमग्न थे, इसी बीच कुछ दूरी पर ठिठुरती हुई एक दीन-हीन स्त्री जो अपने शिशु के शव को गंगा में बहाने के लिये पुरातन अल्प वस्त्रों के साथ झुकी ही थी कि वो लुढ़कती-लुढ़कती बची। माँ की मर्माहत चीत्कार करती अन्तर्वेदना ने ऋषि को अन्दर तक झकझोर दिया। उन्होंने अपनी अन्तर्व्यथा को व्यक्त करते हुए सर्वेश्वर से प्रार्थना की कि हे प्रभो! मुझे शक्ति दो ताकि मैं अपनी ऐसी माताओं की दशा सुधार सकूँ एवं समस्त भाई-बहनों के हित में अपने को सर्वस्व न्योछावर कर सकूँ।'' इस प्रकार की घटना ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को जनसमुदाय के निमित्त सदा-सदा के लिये परमार्थी, परहितचिन्तक जीवन जीने की ललक जता दी तथा ''सत्यार्थ प्रकाश'' का यह जनक सदैव के लिए अमरत्व को प्राप्त हुए। कहने का तात्पर्य है कि प्रेरणा वह उत्प्रेरक है जो मनुष्य की सोई हुई शक्ति को सुषुप्तावस्था से जाग्रत कर प्रचण्डता प्राप्त करा देती है, उसकी सामान्य अवस्था असामान्य अवस्था में बदल जाती है, जोकि पूर्णत: हमारे वश में होता है, छोटी-छोटी बातों में उलझ जाना, धैर्य खो देना, बीते हुए किसी अविस्मरणीय घटना का बार-बार मस्तिष्क में कौंधना आदि से सद्मार्ग दूर होता जाता है, कोई बड़ी उपलब्धि नहीं हो पाती, क्योंकि ये मनोबल एवं मानसिक संतुलन को डवांडोल कर देते हैं, परन्तु इन सबसे परे यदि व्यक्ति किसी लक्ष्य के प्रति आरूढ़ हो जाय, किसी प्रेरणा से वह प्रेरित हो जाय तो यह सभी तुच्छ वस्तुएँ उसके मार्ग में व्यवधान नहीं करती; वह रेस के घोड़े की तरह अपने लक्ष्य के प्रति सदा उन्मुख होकर ''एको ब्रह्मो द्वितीयो नास्ति'' की ओर चलायमान हो जाता है। इन सभी कारकों को अपने व्यक्तित्व में विकसित करना सद्प्रेरणा के अन्तर्गत आता है। यानी अपने व्यक्तित्व के बिखरे हुए एक-एक ईंटों को विकसित कर सुरुचिपूर्ण संरचना का ही नाम प्रेरणा है। इससे लौकिक तथा पारलौकिक दोनों ही जीवन सवँर जाता है उसे शारीरिक या मानसिक विकार से मुक्ति मिल जाती है। जैसे हिन्दुओं में श्रावण मास में श्रद्धा रूपी जलभर कर काँवरियों के रूप में श्रद्धालु नंगे पाव चलकर कोसो कोसो दूर जाकर शिवार्चन कर तृप्ति पाते हैं, वे अपने पूर्वजों, बड़ों से ही प्रेरणा पाते हैं तथा वर्ष में वैज्ञानिक पद्धति से एक्यूपंचर पद्धति से शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ होकर मृत्यु पर्यन्त जीवन यापन करते हैं।

अन्त: प्रेरणा का अर्थ है, आत्मविश्वास, आत्मबल। इसी के सहारे व्यक्ति दुर्गम से दुर्गम कष्टों को पार कर बाधाओं को समन कर, सांसारिक झंझावतों से अविचलित रहकर उस दिव्यता को प्राप्त कर लेता है, क्योंकि निरन्तर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा उसके हृदय में घर कर जाती है। प्रेरक गुरु या विशिष्ट जन उन्हीं आत्माओं को ऐसा अवसर भी देते हैं जिनकी सतपात्रता लोक कल्याण करने एवं आत्मदर्शन की होती है। प्रेरणा की किरण जिसको भी अन्दर तक प्रभावित कर देती है वह अपने धैर्य के प्रभाव को पहचान लेता है जिसे तनिक से प्रयास में वह चीर कर निकल आता है

शेष पृष्ठ तीन पर

गुरु पूर्णिमा महोत्सव, वर्ष 2015

धर्म बन्धुओं,

अपार हर्ष के साथ सूचित किया जा रहा है कि 'गुरु शिष्य परम्परा' का पवित्र पर्व **'गुरु पूर्णिमा महोत्सव'** अघोर गुरुपीठ अघोराचार्य महाराजश्री बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं कुण्ड, रविन्द्रपुरी (शिवाला), वाराणसी में **दिनांक 31 जुलाई 2015 ई0, दिन शुक्रवार** को परम्परागत ढंग से ससमारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

इस पुनीत अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

–: कार्यक्रम :–

1. प्रातःकालीन आरती के बाद श्रमदान एवं सफाई कार्य तथा प्रभात फेरी।
2. प्रातः 8.30 बजे से पूज्य पीठाधीश्वर जी द्वारा पूजन, अर्चन।
3. प्रातः 9.30 बजे से श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य पीठाधीश्वर जी का दर्शन-पूजन।
4. दोपहर 12 बजे से प्रसाद वितरण का कार्यक्रम।
5. सायंकाल 4 बजे से गोष्ठी एवं पूज्य पीठाधीश्वर जी का आशीर्वचन।
6. सायंकाल आरती 7.30 बजे से प्रारम्भ।
7. रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक आयोजन।

गुरु-पूर्णिमा पर विशेष

भेदबुद्धि के तिरोहनोपरान्त एकाकार होते हैं गुरु गोविन्द

कालों के काल कृपालु कपालिक-गुरु। स्वयंसिद्ध सिध्येश्वर सिद्धार्थ गौतम राम हैं, नरतनधारी नरोत्तम, पुरुषोत्तम राम, नरहरि वामन, गिरिधारी घनश्याम हैं। पाप पाखण्ड प्राणी बलि-वध क्रूर कर्म द्रवित दया-सागर शाक्य बुद्ध भगवान हैं। सद्गुरु सदाशिव प्रकाशपुंज चिदानन्द रवि शशि पवन, नीर पावक नभ ज्ञान हैं। जन्म-मृत्यु धर्म-अर्थ काम मोक्ष अधीन जिन्हें 'परमार' प्राणाधार गुरु गौतम सुखधाम हैं।

कालचक्र संचालक कालाधिपति महाकपालेश्वर की पुण्य क्षीण विभूतियाँ जब पंचभूतों को धारण कर जीव जगत में प्रविष्ट होती हैं तब तत्व ज्ञानार्थ गुरु रूप में सद्गुरु अवतरित होते हैं। अविद्या माया के वशीभूत जीव सदाशिव की प्राप्ति में ८४ लाख योनियों का भ्रमण करते हुए मानव तन को प्राप्त करता है—

बीस लाख स्थावर जानों।
नौ लाख सब जलचर मानों।
ग्यारह लाख कूर्म कवि गाए।
पक्षिगण दस लाख बताए।
तीस लाख पशु जानहूँ राई।
चार लाख बानर समुदाई।
जब यह चौरासी घर जावै।
तब मानुष के तन कहुँ पावै।

यद्यपि गरुड़, काकभुशुण्डि, नन्दी, शेषनाग जैसे मानवेत्तर प्राणी भी गुरु रूप में अवतरित हुए हैं। तथापि मानव व मानवेत्तर जीव-जगत को शिव-जगत की ओर बढ़ने का मार्ग सद्गुरु दर्शाता है।

शिक्षा-दीक्षा गुरु व सद्गुरु– प्रथम ज्ञानी मानव अग्नि का साक्षात्कार किया, जब वन-प्रान्त अग्नि के शिव हुए। 'ओइ अग्नि मिले पुरोहितम' से लेकर ऋग्वेद में १२० सूक्तियों में अग्नि की स्तुति हुई। सभ्यता के विकास के साथ शिक्षा-गुरु, दीक्षा गुरु, कुलगुरु का वर्गीकरण हुआ। मगर, सांसारिक शिक्षा-दीक्षा के बाद प्रकृति एवं परा प्रकृति, अपरा प्रकृति ज्ञानार्थ आत्मज्ञान की आराधना हुई और सद्गुरु 'गा'कार रूपी अंधकार से 'रू'कार रूपी प्रकाश पथ-प्रदर्शक बन अवतरित हुए। सूफीमत ने 'मार्फत' बनाकर 'पीर' की अहमियत दी। संत कबीर ने गुरु और गोविन्द दोनों में गुरु को स्वीकृति प्रदान की। गोस्वामी तुलसीदास ने 'कृपा सिन्धु नर रूप हरि' कहा तो अघोराचार्य बाबा कीनाराम जी ने **'जगदानन्द कृपालु गुरु अन्तर रहित उदार।'** कहकर गुरु व गोविन्द अद्वैत सिद्ध कर दिया। बड़े सरकार बाबा अघोरेश्वर महाप्रभु भगवान राम जी ने गुरु को सूर्य एवं शिष्य को प्रकाश की संज्ञा दी। सच तो यह है कि गुरु को शाब्दिक वाक्यात छन्दात्मक एवं परिभाषा में आबद्ध नहीं किया जा सकता।

गुरुकुल व पीठ– भारतीय समाज में गोत्र, प्रवर, वेद, कुलदेव, कुलदेवी, सूत्रादि गुरुकुल एवं गुरुपीठ परम्परा दर्शाती हैं। शस्त्र-शास्त्र, काव्य, दर्शनादि से लेकर योग, वैराग्य, सन्यास की शिक्षा एवं दीक्षा की परम्परा सदियों से रही। सप्तऋषि, वाल्मीकि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, भृगु, जमदग्नि, परशुरामादि गुरुपीठ मूर्धन्य रहे हैं। द्वापर में भारद्वाज पीठ का स्थान द्रोण विद्यापीठ ने ग्रहण की। बौद्ध विहार में एवं तक्षशिला, विक्रमशिला, नालन्दा विश्वविद्यालय प्रकाश में आये। विकृतियों के निवारणार्थ जगद्गुरु शंकराचार्य ने आर्यावर्त में शंकर पीठों की स्थापना की और प्राचीन गुरु-परम्परा जाग्रत हुई। १६वीं शताब्दी में विद्यादान जब व्यवसाय बनकर आडम्बर बना तो अघोराचार्य बाबा कीनाराम जी ने गिरनारी सिद्ध अवधूत परम्परा को पुर्नजीवित किया, उधर, नाथ पंथ ने गोरक्षा पीठ के तहत धर्मध्वज वहन किया। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रभृति गुरुओं ने सन्मार्ग दर्शाया। २०वीं सदी में सिद्ध परम्परा के महान संत अघोरेश्वर महाप्रभु भगवान राम ने गुरु परम्परा पीठ एवं दीक्षा का सरलीकरण कर पीड़ित मानवता को सद्मार्ग दी।

कीनारामी सिद्ध संत परम्परा एवं सिद्धेश्वर सिद्धार्थ गौतम राम– आदि अवधूत भगवान दत्तात्रेय सिद्ध संत परम्परान्तर्गत बाबा कीनाराम जी ने वैष्णव पीठ एवं अघोरपीठ की स्थापना की। क्रीं कुंड शिवाला, वाराणसी अघोरपीठ एवं तारापीठ, जमीडीह (झारखण्ड) अघोरपीठ घोर से अघोर असाध्य से साध्य मार्गदर्शन करा रहे हैं। दत्तात्रेय वेशधारी बाबा कालूराम और अघोराचार्य बाबा कीनाराम एकाकार रूप में हैं तो अघोरेश्वर भगवान राम एवं सिद्धेश्वर सिद्धार्थ गौतम राम एकाकार हैं। कपाल खप्पड़ में प्रवेश २९ नवम्बर १९९२ को धुँआकार अभय मुद्रा में अघोरेश्वर अवधूतेश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम के स्थूल काया के साथ तब अभिन्न हुए जब माँ गुरु की चिता का दुग्धाभिषेक हो रहा था। पड़ाव स्थित गंगाघाट (महाविभूति स्थल) पर अघोरभक्तों ने स्वयं इस दृश्य को देखा। इतना ही नहीं, गोपनीय वसीयत के तहत सर्वेश्वरी समूह देवस्थानम् का अध्यक्ष पद प्रदान कर अपने प्रकाश के साथ एकाकार हो गये बड़े सरकार।

क्रींकुण्ड कीनारामी अघोरपीठ के पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी माँ गुरु के अघोर पथ के पूर्व जीर्णोद्धार में सन्नद्ध हैं। स्वयं सिद्ध सिद्धेश्वर महाप्रभु सिद्धार्थ गौतम राम युवाशक्ति संग्रह एवं परिष्कार सहित संस्कार युगधर्म का मार्ग दर्शाते हुए मोक्ष मार्ग का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। अघोर तख्त पर विराजमान पीठाधीश्वर के लिए अघोर भक्त व शिष्य आत्मा व शरीर रूप में हैं। बहरहाल अनादिनाथ भगवान सिद्धार्थ गौतम राम जी वर्तमान काल में गुरु और गोविन्द रूप में है—

जहाँ घोर अघोर एक समान है
न कोई हिन्दू है और न मुसलमान है
मान-बड़ाई स्तुति न कोई गुमान है।
अघोरपीठ बाबा गौतम निगहवान है।
हस्तवस्ता जिआरत है मुरीद 'परमार' की।
हर अदा पर फिदा जान कुर्बान है।

-परमार अखिलेश

कुम्भ महापर्व नासिक

समस्त श्रद्धालुजन एवं भक्तों को सादर सूचित किया जाता है कि अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान क्रींकुण्ड, वाराणसी द्वारा कुम्भ पर्व के अवसर पर नासिक में अगस्त २०१५ से कुम्भ पर्व को परम्परानुसार मनाने का निर्णय किया गया है। भक्तों, श्रद्धालुओं के प्रवास हेतु शिविर कैम्प के नियत स्थान एवं तिथि की घोषणा कालान्तर में की जायेगी।

द्वितीय पृष्ठ का शेष

तथा आत्मबोध की किरणों से प्रकाशित होकर आत्मज्ञान प्राप्त कर लेना उसके बाँये हाथ का खेल बन जाता है। वह ऊँचाई पर निरन्तर एक सफल पर्वतारोही की तरह चढ़ता ही चला जाता है, उसे किसी से शिकायत नहीं होती, वह अपने मार्ग का निर्भीक पथिक होता है, उसकी साहसिकता, संबल का कार्य करती है। निराशा, भय, असफलता आदि उसके शब्द कोष में स्थान ही नहीं पाते, उसमें धैर्यपूर्वक जब तक सिद्धि प्राप्त न हो जाये, कार्य करते रहने की जीवटता समायी रहती है। उसके मानव जीवन में सभी सरंजाम देर सबेर प्रकृति द्वारा उसे प्रदान कर दिये जाते हैं, जिसके लिये वह हृदय से प्रयत्न, प्रार्थना करता रहता है। उसे कुवासनायें परेशान नहीं करती, लोभ, लालच, ईर्ष्या, तृष्णा, मदांधता आदि अविवेकपूर्ण निषेधित बातों से दूर दूर तक विवेकी व्यक्ति का वास्ता नहीं रहता। ऐसे व्यक्ति दूसरे सद्पात्रों को भी अपनी चुम्बकीय शक्ति से आकर्षित करके उन्हें सद्गुणों को भर लेने को प्रेरित करते रहते हैं। किसी व्यक्ति को धन-दौलत से सहायता न करके यदि उसको विषम परिस्थिति से निकलने का मार्ग प्रशस्त कर दिया जाय तो ऐसे पथ-प्रदर्शन करने वाले

प्रेरणा

अतुल्य प्रदाता हैं तथा वे दूसरे व्यक्ति की बहुमूल्य छिपी हुई शक्तियों को निखार तराश कर उसे ही उसका स्वामी बना देते हैं परन्तु दुर्भाग्यवश हम सभी ऐसे अतुलनीय बल के स्वामी होते हुए भी अपनी सोई हुई शक्तियों को जाग्रत नहीं कर पाते, आलस्य एवं प्रमाद में जीवन की इह-लीला को समाप्त कर लेते हैं।

प्रेरणा को ललकारना भी कहते हैं जैसे रामचरितमानस में तुलसीदास वर्णन करते हैं कि माँ सीता की खोज में लगे हनुमान जी के अन्दर उत्साह की कमी देखकर जामवंत जी ने उन्हें उत्प्रेरित किया —

जामवंत कह सुन हनुमाना।
का चुप साधि रहेउ बलवाना।।
पवन तनय बल पवन समाना।
बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना।।
कवन सो काज कठिन जगमाहीं।
जो नहीं होहीं तात तुम पाहीं।।

इसके पश्चात् हनुमान जी पुर्नजाग्रत हो सामर्थ्य से भर गये तथा अपनी शक्ति का सदुपयोग कर वांछित अभीष्ट को सम्पन्न किए। अमरग्रन्थ गीता का सार भी प्रेरणा पर ही आधारित है, भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा अपने शिष्य अर्जुन को हर प्रकार से प्रेरित कर उन्हें धर्मयुद्ध के लिये तैयार किये जाने का उल्लेख है, गीता के दूसरे अध्याय में शोकाकुल, असमंजस से भरे हुए अर्जुन को प्रेरित कर समझाते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं—

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषये समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टम स्वर्ग्यऽम कीर्तिकरंअर्जुन।।

"हे अर्जुन तुझे इस असमय में यह मोह किस हेतु से हुआ? क्योंकि न तो यह श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा आचरित है, न स्वर्ग को देने वाला है और न कीर्ति को करने वाला ही है। श्रीकृष्ण आगे कहते हैं कि हे अर्जुन! तुम नपुंसकता को मत प्राप्त हो, तुझमें यह उचित नहीं जान पड़ता, हे परन्तप! हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर युद्ध के लिये तैयार हों!

इस प्रकार हमें ग्रन्थों, पुराणों, कथानकों से अन्ततः यही समझाया गया है कि यदि मनुष्य शक्ति को प्रज्जवलित कर अग्नि में परिवर्तित कर दें तो वह सद्प्रेरित होकर अशुद्धियों को जलाकर शुद्ध स्वर्ण के रूप में कुन्दन बनाकर मानव के हाथों में प्रस्तुत कर देगा और यह तभी संभव हो पाता है जब किसी पुण्य के उदय होने से सद्गुरु का सानिध्य मिलता है तथा उनके करुणा रूपी सूर्य की किरणें आत्मप्रकाशित कर हमें धन्य बना देती हैं, सद्गुरु के चरणों में बैठने मात्र से एक बल मिलता है जो हमें प्रेरित कर सभी वृत्तियों को स्वकेन्द्रित कर स्थिर चित्त कर देती है, परन्तु औंधे मुँह बर्तन होने पर गुरु की कृपा बह जाती है, अस्तु बर्तन को सदैव हम सीधा रखें ताकि गुरु का अनुग्रह, हमें प्रेरणा के रूप में सदैव प्रेरित करता रहे तथा हम हर विषम स्थिति-परिस्थिति से निकलकर आसानी से सर्वेश्वर के कृपा-पात्र बनकर लाभ लेते रहें!

विशेषकर औघड़, अघोरेश्वर तो अजस्र प्रेरणा के स्त्रोत होते हैं, परमपूज्य अवधूत भगवान राम जी की प्रेरणादायी प्रार्थना अपने श्रद्धालुओं को निम्न रूप में प्रख्यापित की गई है—

'सर्व की ईश्वरी, श्री सर्वेश्वरी'

'हे मातः! आप बहुत दयालु हैं। सभी प्राणियों को विशेष कर मनुष्य प्राणियों को सद्भावना से प्रेरित करें। सुख और समृद्धि के साथ-साथ शान्ति पथ पर चलने की प्रेरणा दें। हे आनन्दमय मातः भारत भवानी! कलह, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष से मुक्त करें। प्राणियों को रोग, भूख से वंचित करें। हे सर्व की ईश्वरी, श्री सर्वेश्वरी! आपको सभी दिशाओं से प्रणाम करता हूँ। हम समूह में रहे, शान्ति में रहे, करुणाकर मातः! आपको मैं सभी दिशाओं से प्रणाम करता हूँ, सद्बुद्धि दें!'

धर्म बाधा बन रहा है तो उसका तिरस्कार कर आगे बढ़ना है

गुरु पूर्णिमा पर्व पर पूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्मबन्धुओं, माताओं !

थोड़े, बहुत करते हैं। थोड़े को देखकर घबराना नहीं चाहिए। पाण्डव तो पांच ही थे। कम्युनिस्ट बहुत कम ही हैं। मगर उन सबों ने सरकार को हिला रखा है। कोई भी संगठन तो थोड़े लोगों का होता है, जो संचालन करते हैं। औरों का समर्थन होता है। अभी हम सबों को संगठन करना है। देश में कांग्रेसियों की बहुबंशी है। जिला-जिला में, नगर में, गाँव-गाँव में आपको कांग्रेसी दिख पड़ेंगे। मगर उनके संगठन, व्यवहार, कार्यक्रम के बारे में सोचें नहीं। आजकल बहुतेरे लोग ऐसे ही हैं। किसी के पास कोई कार्यक्रम नहीं। वे अवध के नवाब की तरह या तो बैठकर तबला सुनेंगे या गप में समय व्यतीत करेंगे। न काम है, न फुर्सत है। थोड़े का बहुत पावर है। थोड़ा वाला संगठन संचालन कर सकता है। बहुत हुए तो बहुबंशी हो गये। आप जानते हैं, इसीलिये लंका फूँका गया। यदि लंका में संगठन संचालन वाले थोड़े होते तो वैसा नहीं होता। जब तक थोड़े हैं सतयुग में हैं।

किसी भी परिवार में यदि दो और बढ़ गये तो सोच लीजिये वे त्रेता में प्रवेश कर गये। वहाँ तो थाली लोटा लड़ गया तो आश्चर्य क्या? कहीं दो और अधिक बढ़ गये तो महाभारत ही समझ लीजिये। वहीं द्वापर है। फिर उससे भी ज्यादा हुए तो कलियुग में प्रवेश कर गये और जब कलयुग में प्रवेश कर गये तो घर का, मकान का, जायदाद का बंटवारा शुरू हो गया। जहाँ तक थोड़े हैं, सतयुग में हैं। आप देखते नहीं हैं जिसका शार्ट में परिवार है उन लोगों के यहाँ थोड़े अन्न में भरा पूरा रहता है, तीन से यदि चार-पाँच भी हुए कि त्रेता की रचना शुरू हो जाती है। आप इसे प्रत्यक्ष देखेंगे।

और यदि आप संगठन कर सकते हैं और यदि आपका संगठन सच्चा है तो सबों का समर्थन स्वयं ही मिलेगा। आपको यह देखना है कि कम्युनिस्टों को अपने संगठन के प्रति कितनी श्रम निष्ठा होती है। उनमें साफ रहता है कि इतने घर में आग लगाओगे। इतने घर में लोगों को गोली मारोगे तब तुम्हें ऊपर वाले केन्द्र में ले आवेंगे। जितने घर में आग लगाना है, जितने लोगों को गोली मारना है जब तक उससे कम काम करोगे तब तक केन्द्र में न लावेंगे। मगर ऐसे राष्ट्र विरोधी काम करना तो आपको नहीं है। आपको तो उन्नति, प्रगति और सेवा का काम करना है। उसको करने पर आप अपने परिवार में, अपने संगठन में प्रमुख व्यक्ति माने जायेंगे।

निष्ठा के विषय में आप सुन चुके होंगे कि मीरा ने तुलसी को एक पत्र लिखा था कि घर में लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं है। मुसलमानी पीरियड थी। सभी सम्मान ढूँढ़ रहे थे। तुलसी ने, जानते हैं क्या उत्तर लिखा था? **''जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिये ताहि कोटि वैरि सम, यद्यपि परम सनेही।''** यदि राम सीता से प्रेम न हो तो ऐसे परिवार को दुश्मन की तरह छोड़ देना चाहिए। इसके लिए हमको पाँच नजीर भी दिये गये हैं। बलि गुरु तजा, बलि ने गुरु को छोड़ दिया, बन्धु विभीषण, विभीषण ने भाई को छोड़ दिया, भरत महतारी, भरत ने माता को, प्रह्लाद ने पिता को और व्रज की रहने वाली गोपियों ने पतियों को त्याग कर दिया। यदि ईश्वर से प्रेम करने में परिवार, कुटुम्ब सहयोग नहीं देता है तो वह दुश्मन के सदृश्य है। ऐसा करके लोग दिखला गये हैं। भये जग मंगलकारी। यदि किसी चीज की तरफ झुकाव है, उसकी उन्नति चाहते हैं तो बहुत कुछ किया जाता है। क्या नहीं किया जाता है। सब कुछ किया जाता है। कम्युनिस्ट अपने संगठन के लिए झूठ बोलते हैं। आग लगाते हैं, हत्या करते हैं, गोली चलाते हैं। यदि किसी उद्देश्य में सहयोग करना है तो अपने संगठन के उद्देश्य को देखिये। और उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी तरह के व्यापार, आचरण को निम्न मत मानिये। अपनी सफलता के लिये, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सब कुछ कर सकते हैं। वहाँ पर कोई पाप नहीं है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हम देखते हैं हम घर नहीं छोड़ते, गाली नहीं सहते। अन्दरूनी लक्ष्य पूर्ति के लिये चाहें हमें मारें, गाली दें सब सहेंगे। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अपने संगठन के लिये चाहे जो कुछ करना हो, करेंगे। कृष्ण को देखिये। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये वे कहते हैं मामा, गुरु, चाचा सबों को मारो। परन्तु क्या लक्ष्य हो, सोचना चाहिए। संस्था की उन्नति कैसे हो विचारना चाहिये। वह सब धर्म में निहित है। वही एक दिन जाकर वास्तविक धर्म बन जाता है। जहाँ तक ये लोग शब्द, अक्षर, मंत्रों की व्याख्या दे रहे थे, कह रहे थे, ये शब्द, अक्षर, मंत्र सभी अपने विश्वास और पवित्रता पर निर्भर करता है। आपको ग्राम में ही बहुत पुरुष, महिला ऐसे मिलेंगे, जिनको वाक् सिद्धि स्वत: रहती है। वे अपनी वाणी को जोगाते हैं, मनन करते हैं। इसलिये इनकी वाणी का प्रभाव पड़ता है। उसमें ताकत रही है, आकर्षण रहता है।

आप आने वाले वक्त का स्वागत करें। आने वाले वक्त में लोग जाति तथा कास्ट के आडम्बर को तोड़ेंगे तथा कर्म में विश्वास करेंगे। धर्म वह अच्छाई और सच्चाई है जो जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की उत्प्रेरणा देती है। वास्तविक धर्म, धर्म के साथ-साथ अर्थ के अर्जन पर भी बल देता है क्योंकि अर्थ ही धर्म का पोषक है।

आप देखेंगे बहुत व्यक्ति कड़े शब्द में बुलाते हैं। पर हम उनसे प्यार से मिलते हैं। बहुत लोग दीन दु:खी स्वर में बुलाते हैं। फिर भी हम उन्हें झिड़क देते हैं। हममें झिझक होती है। हम कहते हैं उन्हें हटाओ। इसका कारण यही है कि उनकी वाणी में श्री नहीं रहती जिसका हृदय पर प्रभाव पड़ता और उनकी दीनता को दूर करने का उपाय ढूँढ़ता। कितने व्यक्ति रे कह कर पुकारते हैं, किन्तु उनकी वाणी में श्री है। देवता का अंश है, ये सब गुण जो है दैवीय गुण है और ये प्राप्त तभी होगा जब हम ठीक लक्ष्य की ओर संगठन की ओर बढ़ रहे हैं। लक्ष्य की ओर, संगठन की ओर बढ़ने में जो भी रोड़ा सामने पड़ रहा है, उसे हम हटावें। यदि धर्म भी बाधा बन रहा है तो उसका तिरस्कार कर आगे बढ़ना है। आपका धर्म, ज्ञान, भक्ति, योग जो भी लक्ष्य की ओर, संगठन की ओर अडंगा खड़ा करता हैं, उसे आप ठोकर मार सकते हैं। आप चार व्यक्ति से संगठन की बात कर रहे हैं और ऐसे में कोई आकर धर्म, ज्ञान, ईश्वर की बात करने लगे तो उसे ठोकर मार देना चाहिये। कौरवों की संख्या तो सौ की थी। विनष्ट हो गये। वैशाली कैसे विनष्ट हुई इसका इतिहास सुना होगा। अजातशत्रु ने इसके विनाश के लिये भगवान बुद्ध से पूछा था। भगवान बुद्ध ने कहा जिसमें एकता हो, संगठन हो, उसका विघटन नहीं होगा। जो एक साथ बैठेगा, सोचेगा, विचार करेगा, संगठित रहेगा, एक लक्ष्य की पूर्ति में मन, वचन, कर्म से मिला रहेगा वह विघटित नहीं होगा। अजात शत्रु ने षडयंत्र से अपने ही एक चर को कपाल मुड़वाकर आरोप लगाया और राज्य से निकाल दिया। उस चर ने वैशाली में जाकर शरण ली। उन लोगों ने भी सोचा नहीं, समझा नहीं कि यह शत्रु का आदमी है। उन लोगों ने उससे पूछा कि तुम किस पद पर काम करते थे। उसने कहा कि वह नवयुवकों को शिक्षा देता था। उन सबों ने उसे नवयुवकों को शिक्षा देने का ही पद दे दिया। वह उनमें से किसी एक को अलग बुला लेता और पूछता आज तुम क्या खाये हो। वह जब अपने मित्रों के पास जाता तो मित्र उससे पूछते। वह सही बताता। पर इतनी छोटी बात पर किसी को विश्वास नहीं होता। दूसरे दिन दूसरे से। तीन दिन के बाद तीसरे से वह ऐसे ही करता। छोटी-छोटी बातें पूछता। छोटी-छोटी बात पूछने से उन सबों में आपस में ईर्ष्या पैदा हो गयी। जब सबों में ईर्ष्या पैदा हो गई तो उसने अजातशत्रु को खबर दी चढ़ाई करो। भोंपा बजाया गया। शंख फूँका गया। मगर पहले जैसे सब संगठित हो जाते थे वैसा नहीं हुआ। कोई इधर तो कोई उधर हो गया। देखिये कैसे किसी में भेद डालना होता है। भेद डालने वाले व्यक्ति कैसे होते हैं। भेद छोटे आदमी नहीं डालते। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो मियाँ बीबी में झगड़ा लगा देते हैं। पत्नी से जाकर कहते हैं कि साहब की गाड़ी वहाँ खड़ी थी। मनुष्य की बुद्धि ही तो ठहरी। आदमी तो बुद्धि का कर्ज लेकर चलता है। बड़े-बड़े राजा को देखिये मंत्री की क्या जरूरत। अपने सिद्धान्त, अपने संगठन, अपनी व्यवस्था के लिए आप एक रहें। भेदभाव न लावें यह मैं खुद चाहता हूँ। क्योंकि संस्था हमारा लड़का है। जिसके आप लोग अंग है। हाथ, अंगुलियाँ, बाल। अभी तो बच्चा है। जिस दिन इसकी जवानी आयेगी इस संसार में एक स्थान पायेगा। इसको स्थान दिलाने वाला, स्वस्थ करने वाला हमीं आप हैं लक्ष्य और सिद्धान्त पक्के हो तभी हम ऐसा कर सकते हैं।

अघोर सूत्र

- **गुरु एक स्टेशन के समान हैं। आप वहाँ से हर स्थान का टिकट ले सकते हैं।**
- **माँ-गुरु के शरण में कोई बाधा नहीं।**
- **माँ-गुरु की प्रार्थना से प्राणी अमरत्व प्राप्त करता है।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी